एक और अनेक क्षण

— श्रीरंग —

प्रकाशक
सरस्वती प्रेस-बनारस
१ जनवरी १९५१

मूल्य : सजिल्द तीन रुपया

मुद्रक
सर्वोदय प्रेस-बनारस

क्रम

१	गाने बरस रहे हैं झर झर	...	१
२	गाता हूँ नित साँझ सकारे	...	३
३	आज प्रिया का जन्म दिवस	...	४
४	अब न कभी आँसू रोकूँगा	...	५
५	कैसे आँसू शान्त करेंगे	...	६
६	कभी कभी होता है यह भी	...	७
७	शिशिराम्बुद से छलका पानी	...	८
८	बरस रहे हैं दृग निरमोही	...	९
९	मैंने अब तक बात न जानी	...	१०
१०	आज नहीं बेला सोने की	...	११
११	बोझिल-सा लगता है जीवन	...	१२
१२	मुझसे कोई पूछ रहा था	...	१३
१३	किसने यह पीड़ा संचय की	...	१४
१४	पौ फटने से पहले अम्बर	...	१५
१५	दुःख कौन से अब बाकी हैं	...	१६
१६	बसा-बसाकर दिल की दुनिया	...	१७
१७	जग में कोई भी पीड़ित हो	...	१८
१८	यह मेरापन सीमित क्यों है	...	१९
१९	बरसो, ओ दृग-सावन, बरसो	...	२०
२०	मेरे दिल का चित्र बना है	...	२१
२१	हाय, किसी की सूनी घड़ियाँ	...	२२
२२	एक सितारा गगन चाँद के	...	२३
२३	बहुत पी चुका विष जीवन का	...	२४
२४	शायद मौसिम बदल रहा है !	...	२५
२५	चाँद बदलियों में हँसता है	...	२६
२६	पिछली रात, फुहार चाँदनी	...	२७
२७	बारबार कुछ कहता पतझर	...	२८
२८	चाँद छिप चुका रात ढल चुकी	...	२९
२९	गया समय फिर बुला रहा हूँ	...	३०

३० मुझे किसी से प्यार नहीं है ... ३१
३१ हाय, चला मैं, मुझे बचालो ... ३२
३२ आँखों के पानी से अब मैं ... ३३
३३ झूम झुकी प्रांगण पर सन्ध्या ... ३४
३४ नभ पर हँसा भोर का तारा ... ३५
३५ हँसती है अब दुनिया मुझ पर ... ३६
३६ मैं क्या कुछ था, अब मत पूछो ... ३७
३७ मैं कब कहता हूँ तुम आओ ... ३८
३८ अपने से नाता तोड़ूँगा ... ३९
३९ अपना विश्व बदल डालूँगा ... ४०
४० अपने नहीं आज सुपने भी ... ४१
४१ एक सहारा-सा है जब से ... ४२
४२ अपना कहूँ जगत में किसको ... ४३
४३ आज न सौरभ है न रङ्ग है ... ४४
४४ झिलमिल झिलमिल झलक रहा है ... ४५
४५ अब वह पीड़ा नहीं, न तड़पन ... ४६
४६ सरस सलोनी याद तुम्हारी ... ४७
४७ किन्तु हाय, यह दुख है इसमें ... ४८
४८ होठों पर गाने आकुल हैं ... ४९
४९ एक शलभ जल बुझा निमिष में ... ५०
५० दूर समझता है क्यों उनको ... ५१
५१ अपनी याद नहीं अब आती ... ५२
५२ तेरी मंज़िल बहुत दूर है ... ५३
५३ आज जल उठी यह दीपावलि ... ५४
५४ कूक रही है वन में केकी ... ५५
५५ आज न क्या सूरज निकलेगा ... ५६
५६ जग में मिला यही मुझको तो ... ५७
५७ यह भी है अधिकार उसीका ... ५८
५८ फड़क रहा है बुझता दीपक ... ५९
५९ नव-वसन्त की रात, उनींदी ... ६०
६० मेरे सोये भाग जगा दो ... ६१
६१ नींद नहीं आती जाने क्यों ... ६२

६२	कैसे जागी व्यथा सुला दूँ	...	६३
६३	हाय, सुबह की सपनिल घड़ियाँ	...	६४
६४	मैं भी जीवित था इस जग में	...	६५
६५	बादल के टुकड़ों से सूरज	...	६६
६६	आज विश्व में भरा हुआ है	...	६७
६७	जाने क्यों रोता रहता हूँ	...	६८
६८	प्राणों में कुछ फड़क रहा है	...	६६
६६	हाय, गया रजनी का वैभव	...	७०
७०	उजड़ गयी रजनी की शोभा	...	७१
७१	आज मृत्यु मुस्काती-सी है	...	७२
७२	एक अँधेरी दीर्घ रात	...	७३
७३	छिटक रही है मस्त चाँदनी	...	७४
७४	आज हृदय भारी भारी है	...	७५
७५	क्यों उदास रहता है, पागल	...	७६
७६	कटते नहीं, हाय क्यों यह दिन	...	७७
७७	दिल में मचल रहीं बरसातें	...	७८
७८	खोज रहा हूँ कोई दर्दी	...	७६
७६	आँखों से आँसू झरते हैं	...	८०
८०	झरे कुसुम चुनता रहता हूँ	...	८१
८१	जब से तुम बदलीं हो प्रेयसि	...	८२
८२	क्यों तूफ़ान उठाता है नित	...	८३
८३	आज बढ़ गयी हाय और भी	...	८४
८४	अपना कहूँ जगत में किसको	...	८५
८५	जग में यों भी हुआ न होगा	...	८६
८६	कहीं दूर गाता है कोई	...	८७
८७	हारी बाज़ी कब जीतेंगे	...	८८
८८	मेरी बनकर अब मुझको भी	...	८६
८६	मैं भी अब जी लूँगा, प्रियवर	...	६०
६०	मैं हूँ अपनी आप विफलता	...	६१
६१	सूज रही हैं क्यों यह पलकें	...	६२
६२	मेरा साथी बिछुड़ गया है	...	६३
६३	फूट गयी, हा, मेरी क़िस्मत	...	६४

६४	...लम्बा निष्ठुर विधुर सँदेसा	...	६५
६५	हाय, हृदय कुछ समझ न पाया	...	६६
६६	जीवन तो अब भी प्यासा है	...	६७
६७	छिटक रही है शरत् चाँदनी	...	६८
६८	आज प्रभात नहीं क्यों होती	...	६९
६९	मचल रहा है प्यासा प्यार	...	१००
१००	आज स्वप्न भी मुस्काते हैं	...	१०१
१०१	प्रिय, तुमने भी विश्व रचा था	...	१०२
१०२	बरस थकी—सन्ध्या का प्रांगण	...	१०५
१०३	अब तो तुम्हें और भी प्रेयसि	...	१०६
१०४	विदा	...	१०८
१०५	आम्र मञ्जरी सिहर सिहर कर	...	१११
१०६	अब क्यों रोते प्राण निरन्तर	...	११३
१०७	दिल की धड़कन याद न आ	...	११४
१०८	विदा समय की सघन उदासी	...	११५
१०९	मुझको दुखी किये जाती है	...	११६

जो बारह साल से मुझ जैसे आवारा मिज़ाज प्राणी के साथ मित्रता निभा रही है उसी उदार हृदया निर्मल को

—जं.

संशोधन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	८	!	?
६	८	!	?
६	६	है	हैं
१०	७	मा नामुराद	मा यह नामुराद
१०	८	फरियादें	फ़रियादें
१४	४	धुआँ	धुआँ
१५	२	लेटा लेना है अँगड़ाई सी	लेता है जब अँगड़ाई-सी
१६	१	बाकी	बाक़ी
१६	७	बाकी	बाक़ी
१६	५	तमन्नाओं ही की	तमन्नाओं की
२२	८	मेरी आँखों आँसू लड़ियाँ	मेरी में आँसू की लड़ियाँ
२६	५	खुशबू	खुशबू
३५	८	हाय, न रहा	हाये गया
३८	८	मेरे	अपने
५६	८	में	के
६२	६	हैं	हैं
६४	७	मनवाला	मनवाली
६४	११	घड़िया	घड़ियाँ
७०	७	धीरज हीन	धीरजहीन
७०	१४	!	?
७१	३	आहों	आहों से
७१	८	प्राणों क	प्राणों की
७१	१२	इ स की	इसकी
७५	११	किसी	हाय
७७	१,२	घटते	कटते
७७	६	तुम्हें	तुझे
७७	८	उपहार	उपकार
८१	११	खाया खोया	खोया खोया
८२	११	गफ़लत-सा	ग़फ़लत-का
८८	८	!	?

गाने बरस रहे हैं झरझर !

संगीहीन उदास अँधेरा
बना हुआ है एक बहाना,
यह तो उनकी सरस याद है
जिसने मुझे सिखाया गाना;-

इससे विरह-निशा के दुख को
धोका दे लेता हूँ अकसर !

गाने बरस रहे हैं झरझर !!

१९-४

◆

गाता हूँ नित साँझ सकारे !

गाता हूँ नित साँझ सकारे !

तुम्हें देखने को अधीर जब
मैं निर्वासित हो जाता हूँ,
संगीहीन अँधेरे के आकुल
क्रन्दन में खो जाता हूँ;
अपने प्यासे गीतों के तब
गीले अञ्चल फैलाता हूँ,

इस आशा में, हाय, कि छू लूँ
इन से ही प्रिय चरण तुम्हारे !

गाता हूँ नित साँझ सकारे !!

२०-२

आज प्रिया का जन्म दिवस

बीत गया इक और बरस !

निर्वासन में फिर आ पहुँचा
आज प्रिया का जन्मदिवस !
मेरे हृदय-द्वार पर आ यह
करुण भाव से पूछ रहा है ;
"पूजा का हो गया समय,
इस दुखी हृदय का अर्घ्य कहाँ है !"
गूँज उठी प्रतिध्वनी प्रश्न की
शून्य हृदय में उत्तर बन कर :
"अर्घ्य कहाँ है !"

आँखों ने यह सुना, और फिर
धीरे धीरे, दीन भाव से
पड़ीं बरस !

आज प्रिया का जन्म दिवस !!

१-१-४३
(बरेली सेन्ट्रल प्रिज़न)

अब न कभी आँसू रोकूँगा !

अब न कभी आँसू रोकूँगा !

गिरने देता था न धूलि पर
जान इन्हें आँखों के तारे,
हाय न समझा था कि हृदयमें
पलट बनेंगे यह अंगारे,

इन हत्यारों को अब जग के
पैरों में ही रुलने दूँगा !

अब न कभी आँसू रोकूँगा !

६–१–४३

कैसे आँसू शान्त करेंगे !

युग युग रो अब नयन मरेंगे !

भरी जवानी में मर कर यह—
पागल दिल ने क्या कर डाला,
जलती राख भरे मरघट की
झझा से जीवन भर डाला—

कैसे एक जवानी के अब !
आँसू इस को शान्त करेंगे !

युग युग रो अब नयन मरेंगे !!

७—१

कभी कभी होता है यह भी !

कभी कभी होता है यह भी !

रक्त गुलाबी आँसू में जब
दिल की दुनिया ढल चुकती है,
अभिलाषा, की विजन साँझ जब
हृदय क्षितिज पर जल चुकती है,

विकट निराशा की आँधी में
पगली आशा दिये जलाती।

कभी कभी होता है यह भी !!

७-१

शिशिराम्बुद से छलका पानी !

शिशिराम्बुद से छलका पानी !

रिम झिम वर्षा, झीने बादल;
गीला दिन, बरफीला कुहरा;
छल-सी घातक नर्म हवाएँ;
सरदी का सुनसान सबेरा;

और जला जाता हूँ, रे, मैं
हाय, सुलगती व्यर्थ जवानी !

शिशिराम्बुद से छलका पानी !!

७-१

बरस रहे हैं दृग निरमोही !

देखे आज न मुझ को कोई !

दिल में भड़क रही है ज्वाला;
सुलग रही गीली आहें ;
जगी तमन्नायें रोती हैं ;
तरस रही है ढीली बाँहें ;

अम्बर पर छाये हैं बादल
बरस रहे हैं दृग निरमोही !

देखे आज न मुझ को कोई !

९–१

◆

मैंने अबतक बात न जानी !

मैंने अब तक बात न जानी !
सन्ध्या की क्यों देख उदासी
भर आता आँखों में पानी !

लेने लगती सदा करवटें
भूली बिसरी दुखिया यादें ;
डूबा सा यह नामुराद दिल
हो निढाल करता फरियादें ;

कहीं न हो यह साँझ रँगा नभ
मेरे दिल की करुण कहानी—
मैंने अब तक बात न जानी;

१०-१

आज नहीं बेला सोने की !

आज नहीं बेला सोने की !'

भीगी रात, गुलाबी जाड़ा ,
मस्त चाँदनी, तारे, बादल !
"पतझड़ बीत चली" यह गाती
कहीं दूर जङ्गल में कोयल ;

फिर भी रोता हूँ ! बस समझो
आदत है मुझको रोने की !

आज नहीं बेला सोने की !!'

११–१

बोझिल-सा लगता है जीवन !

बोझिल-सा लगता है जीवन !

कोमल अरमानों की धड़कन
फाग लहू से खेल रही है ;
मरघट की सुनसान साँझ-सी
सुख-सपनों में भरी हुई है ;
और, हाय, सुख की आशा तो
लगती है केवल पागलपन !

बोझिल-सा लगता है, जीवन !!

१२-१

●

मुझ से कोई पूछ रहा था !

मुझ से कोई पूछ रहा था !!

"सूज रही हैं क्यों यह पलकें !—
आँखों में इतनी लाली क्यों ?'
कैसे कहता—"रातों का मैं
छिप छिप कर रोया करता हूँ !"

आँखें मल, कह दिया कि-"योंहीं,
रात ठीक कुछ सो न सका था !"

मुझ से कोई पूछ रहा था !!

१३-१

किसने यह पीड़ा सञ्चय की ?

किसने यह पीड़ा संचय की ?

घूम रहा है मेरे दिल में
हूक बना जो एक धुआँ-सा,
लहू रुलाती है जो मुझको
अन्तहीन अन्तर व्याकुलता

गूँज न हो यह किसी दूसरे,
हाय, तड़पते विकल हृदय की !

किसने यह पीड़ा संचय की !!

१४–१

●

पौ फटने से पहले अम्बर
लेटा लेता है अँगड़ाई-सी

हाय, तुम्हें कोई बतलाता !

पौ फटने से पहले अम्बर
लेता है जब अँगड़ाई-सी;
सारी दुनिया जब सोती है
पवन जागती अलसाई-सी;

तुम से दूर हाय ऐसे में—
रोता है नित एक अभागा !

हाय, तुम्हें कोई बतलाता !!

१५–१

◆

दुःख कौन-से अब बाकी हैं

जीवन से अब भय खाता हूँ !

घोर निराशा की ज्वाला के
प्रखर सत्य से खेल चुका हूँ,
छलिया आशा के सब सदमे
इन प्राणों पर झेल चुका हूँ ;

दुःख कौन-से अब बाकी हैं
जिन के लिये जिये जाता हूँ !

जीवन से अब भय खाता हूँ !

१६–१

बसा-बसा कर दिल की दुनिया
ख़ुद बरबाद किये जाता हूँ

जीना कहूँ इसे या मरना !

बसा बसा कर दिल की दुनिया
ख़ुद बरबाद किये जाता हूँ;
फाड़ फाड़ प्राणों के अञ्चल
ख़ुद कम्बख़्त सिये जाता हूँ,

हो न बावली, हाय, किसी के
दिल की यों भी दुखी तमन्ना !

जीना कहूँ इसे या मरना !!

१६–१

●

जग में कोई भी पीड़ित हो
भर आती हैं आँखें मेरी

घिर आयी है रात अँधेरी !

इतना दर्द उमड़ आया है
मेरे बुझे हुये जीवन में :-
आज पराई आहें तक भी
गूँज रही है मेरे मन में,

जग में कोई भी पीड़ित हो
आँखें भर आती हैं मेरी !

घिर आई है रात अँधेरी !!

१७-१

यह मेरापन सीमित क्यों है ?

यह मेरापन सीमित क्यों है ?

जग में रूप किसी का साथी,
और किसी का रंग सहारा,
कोई सरस तमन्नाओं ही का
प्रात-रँगी आँखों का तारा,

जिस के पास न हो कुछ भी वह,
हाय, अभागा जीवन क्या है!

यह मेरापन सीमित क्यों है !!

१७-१

बरसो, ओ दृग-सावन, बरसो !

बरसो, ओ दृग-सावन, बरसो !

जीने के दिन बीत चुके हैं,
मरने की अब घड़ियाँ देखो !!
अब वह तड़प नहीं रातों की
और न पहले से दिन ही हैं
जीवन की घातक कड़वाहट
नस नस में अब बसी हुई है !

नहीं रहा अब प्यार किसी से
शायद इस दुनिया में मुझ को !

बरसो, ओ दृग-सावन बरसो !!

१८-१

मेरे दिल का चित्र बना है

देखो नभ में रक्त सना है !

उग्र वासना- मे जलते घन-

खण्ड लिये अपने घेरे में,

सपनों-सी रंगीन साँझ हँस

क्षणिक, छिपी निशि अन्धेरे में;

इसे न समझो सन्ध्या, प्रिय, यह

मेरे दिल का चित्र बना है !

देखो नभ में रक्त सना है !!

११-१

●

एक सितारा रात चाँद के
पास बिहँसते देखा मैंने

हाय प्राण, क्यों मुझे बिसारा !

एक सितारा रात-चाँद के
पास बिहँसते देखा मैंने
लगा सींखचों से फिर पहरों
रोता रहा भाग्य को अपने

हाय, न हो मुझ सा भी कोई
जग में अरमानों का मारा !

हाय, प्राण, क्यों मुझे बिसारा !!

२० १

•

बहुत पी चुका विष जीवन का

कब तक रोऊँ और रुलाऊँ !

बहुत प्रीत के गीत गा चुका ;
बहुत हृदय के घाव सी चुका ;
बहुत पी चुका विष जीवन का ;
बहुत जी चुका, बहुत जी चुका ;
अब तो एक यही इच्छा है
भरी जवानी में मर जाऊँ !

कब तक रोऊँ और रुलाऊँ !!

१७-१

•

शायद मौसिम बदल रहा है !

शायद मौसिम बदल रहा है !

आज उनींदी रात खड़ी है
नृत्य-भंगिमा-सी में निश्चल ;
अँगड़ाई-सी तोड़ रहे हैं
पतझड़ के आवारा बादल,

और निरन्तर एक धुआँ-सा
मेरे दिल से निकल रहा है !

शायद मौसिम बदल रहा है !!

२१-१

◆

चाँद बदलियों में हँसता है

खोया-सा हूँ आज मैं कहीं !

चाँद बदलियों में हँसता है;
उनकी छवि मेरे जीवन में;
नभ पर तारे चमक रहे हैं,
उन की आँखें मेरे मन में,

आज न आँसू हैं, न सिसकियाँ,
मैं ही शायद आज "मैं" नहीं !

खोया-सा हूँ आज मैं कहीं !!

२२ १

◆

पिछली रात, फुहार चाँदनी,
हवा स्वप्न में घोल रही है

कोई मुझे झँझोड़ रहा है!

उड़ने को प्राणों का पंछी
पिंजरे में सिर फोड़ रहा है!!

पिछली रात, फुहार, चाँदनी,
हवा स्वप्न-से घोल रही है
दूर कहीं अनुरागमयी---
अध-जगी फ़ाख़्ता बोल रही है,

घायल पंछी-सा कुछ मेरी
छाती में दम तोड़ रहा है!

कोई मुझे झँझोड़ रहा है!!

२३-१

बार-बार कुछ कहता पतझर

प्राणों में कुछ फड़क रहा है !

ढलती रात, अधीर बदलियाँ;
रिमझिम बूँदें; फीका अम्बर,
गीली मिट्टी की खुशबू में—
बार बार कुछ कहता पतझर;
किन्तु सुनूँ कैसे ? मेरा दिल
ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा है !

प्राणों में कुछ फड़क रहा है !!

२४–१

●

चाँद छिप चुका रात ढल चुकी

'बहुत रुलाया अनजाने में !'

चाँद छिप चुका, रात ढल चुकी;
अब तो पल भर सो जाने दे !

कहीं दूर छेड़ है कोई
एक मधुर अलबेली तान;
किन्तु मुझे लगता है माना
निकल रहे हों मेरे प्राण;
झलक रही है चाल किसी की
इस लै के लहराने में !

'बहुत रुलाया अनजाने में !!'

२८-१

◆

गया समय फिर बुला रहा हूँ !

गया समय फिर बुला रहा हूँ !

जगा रही है याद किसी की
आज जवानी का फिर सपना;
पल भर को मैं भूल गया हूँ
नित का गाना, आहें भरना,

—'मुझ को भूल चुका है कोई—';
मैं तो यह भी भूल रहा हूँ !

गया समय फिर बुला रहा हूँ !!

२०-

मुझे किसी से प्यार नहीं है

अपनी हार लिये फिरती है !

बीत चुके अरमानों के दिन ;
झुलस चुकी प्राणों की आशा ;
मुझे किसी से प्यार नहीं है ;
नहीं चाहिये प्यार किसी का ,

फिर क्यों यह निर्लज्ज जवानी
जीवन-भार लिये फिरती है ?

अपनी हार लिये फिरती है !!

२९—१

हाय, चला मैं, मुझे बचा लो !

हाय, चला मैं, मुझे बचा लो !

मैं आशा की शीर्ण नाव हूँ ;
मुझे न फँसने दो लहरों में ;
डूबा चला जा रहा हूँ मैं
हाय, निराशा के भँवरों में ;

लहू-पले अरमानो, तुम हो
आज सँभल कर मुझे सँभालो !

हाय, चला मैं, मुझे बचा लो !!

३०–९

◆

आँखों के पानी से अब मैं—
इसे हरा करने बैठा हूँ

किस्मत से लड़ने बैठा हूँ !

गूँथा किया हार जीवन भर
तोड़ तोड़ प्राणों की कलियाँ,
जब पहनाने योग्य हुआ, तब
हाय, अभागा सूख चुका था,

आँखों के पानी से अब मैं
इसे हरा करने बैठा हूँ !

किस्मत से लड़ने बैठा हूँ !!

३०—१

●

झूम झुकी प्राङ्गण पर सन्ध्या !

झूम झुकी प्रांगण पर सन्ध्या !

उलझ गयीं कारा–सीखों में
ढलते रवि की अन्तिम किरणें;
चुप बैठा है एक अभागा
उन के कुम्हलाये प्रकाश में;

अपने बेबस अरमानों पर
ढलती आशा की छाया का,
एक सजीव, कलामय, मानों,
चित्र बना बैठा है पगला !

झूम झुकी प्रांगण पर सन्ध्या !!

३–११

नभ पर हँसा भोर का तारा !

नभ पर हँसा भोर का तारा !

यह निर्भागी प्यासी आँखें
मुझे न सोने देतीं पल भर;
सारी दुनिया जब सोती है
यह बरसा करती हैं झरझर;

सपनों तक में उन्हें देखने
का अब, हाय, न रहा सहारा !

नभ पर हँसा भोर का तारा !!

१–२

◆

हँसती है अब दुनिया मुझ पर !

हँसती है अब दुनिया मुझ पर !

मैं निर्धन ही सदा नहीं था
जैसा जग अब देख रहा है;
बाँयीं ओर इसी छाती में
एक राख का ढेर पड़ा है;

बंधु, किसी ने कभी यहाँ भी
आग जलायी थी हँस हँस कर !
हँसती है अब दुनिया मुझ पर !

१—२

मैं क्या कुछ था, अब मत पूछो !

मैं क्या कुछ था, अब मत पूछो !

सूखे तरु की डाल समझ कर
मुझे किसी राही ने तोड़ा;
जला - जला फिर मेरी लौ में
किया चैन से रैन - बसेरा;

हाय भोर होते ही, वन में
जलते छोड़ गया वह मुझको !

मैं क्या कुछ था, अब मत पूछो !!

१–२

●

मैं कब कहता हूँ तुम आओ !

मैं कब कहता हूँ तुम आओ !

यह तो मुझे ज्ञात है, रूपसि;
नहीं भाग्य में तुमको पाना;
लेकिन मेरे जीने का फिर
क्यों बन बैठीं, हाय, बहाना ?

दूर रहो तो रहो, किन्तु फिर
मेरे सपने भी ले जाओ !

मैं कब कहता हूँ तुम आओ !!

१–१

अपने से नाता तोड़ूँगा!

अपने से नाता तोड़ूँगा!

अपना मुझे बनाने पर भी
कभी न बन पायीं तुम मेरी;
यही सही! मैं भी तो देखूँ;
कब तक मुझ से दूर रहोगी?
मैं इस "मैं" को ही अब "मैं" से
देख बना कर "तू" छोड़ूँगा!

अपने से नाता तोड़ूँगा!!

२-२

◆

अपना विश्व बदल डालूँगा !

अपना विश्व बदल डालूंगा !

कब तक रोऊँ, नींदें खोऊँ;
अश्रु सलिल में रातें धोऊँ ;
मुझे नहीं अपनाते यदि तुम;
मैं हीं क्यों निज को अपनाऊँ !

अब इस दिल को जिसमें तुम हो
पैरों तले कुचल डालूंगा !!

अपना विश्व बदल डालूंगा !!

३-२

अपने नहीं आज सुपने भी !

अपने नहीं आज सुपने भी !

रोना अपना, आज न हँसना;
अपनी जाग्रति और न नींदें;
दुनिया में कोई निर्भागा
हो न किसी के यों भी बस में;

जितना उन्हें भुलाता हूँ, वह
याद आ रहे हैं उतने ही !

अपने नहीं आज सुपने भी !!

३–२

●

एक सहारा-सा है जब से
नहीं आसरा रहा किसी का

उजड़ गयी सपनों की दुनिया !

दिल में अब वह कसक नहीं है !
रो रो मरते नहीं नैन भी,
मरघट ही की सही, किन्तु अब
रहती तो है एक चैन सी.!

एक सहारा—सा है, जब से
नहीं आसरा रहा किसी का !

उजड़ गयी सपनों की दुनिया !

३—२

•

अपना कहूँ जगत में किसको !

अपना कहूँ जगत में किसको !

किसी दूसरे से अब कैसा
हाय, बदल जाने का शिकवा !
अपना हो कर नहीं रहा जब
लहूपला यह दिल ही अपना,

लाख मना करने पर भी तो
याद किया करता है उनको !

अपना कहूँ जगत में किसको !!

४-२

●

आज न सौरभ है न रंग है

अब क्यों अटक रहे हैं प्राण !

आज न सौरभ है न रंग है,
और न कूजन की झंकारें,
सूखे तरु-सा ऊर्ध्व बाहु मैं
बना खड़ा अभिशाप विश्व में

कोई मुझे जला डाले तो—
रह जाये मेरा भी मान !

अब तक अटक रहे है प्राण !!

४-२

झिलमिल झिलमिल झलक रहा है

मुझको इस जीने ने मारा !

"कैसे पिछली रात गुज़ारी ।"
साथी, मुझ से पूछ रहे हो !
गुज़र गयी बस, और क्या कहूँ !
(वैसे चाहो तो यह देखो)

झिलमिल झिलमिल झलक रहा है
पलकों पर प्रभात का तारा !

मुझ को इस जीने ने मारा !!

५--२

●

अब वह पीड़ा नहीं, न तड़पन,

सोई क़िसमत हाय, न जागी !

अब वह पीड़ा नहीं, न तड़पन ,
और न पहला सा दिल ही है ;
रातों उठ - उठ चुपके - चुपके
फिर क्यों रोया करता नित मैं

शायद मुझ को रोने की यह
आदत ही पड़ गयी अभागी !

सोई क़िसमत, हाय, न जागी !!

५—२

◆

सरस सलोनी याद तुम्हारी !

भटक रही है आज बिचारी !

जब मेरा अनुराग भरा दिल
हाय, उजाड़ा था, निर्मोही ,
और नहीं कुछ तो पल भर को
सोच लिया होता इतना ही ,

हो जायेगी बेदर, बेघर
सरस सलोनी याद तुम्हारी !

भटक रही है आज बिचारी !!

६–२

●

किन्तु हाय, यह दुख है इसमें
रहती थी नित याद किसी की

इस की किस्मत ही ऐसी थी !

टूट गया यदि नामुराद दिल
तो फिर इसका रोना क्या है !
यह तो दुनिया में युग युग से
सदा टूटता ही आया है !

किन्तु हाय, यह दुख है, इसमें
रहती थी नित याद किसीकी !

इसकी किस्मत ही ऐसी थी !!

६-२

होठों पर गाने आकुल हैं

आज नहीं कुछ सुधबुध अपनी !

होठों पर गाने आकुल हैं,
आँखों में मोती की लड़ियाँ,
धड़क रहा है बार बार दिल,
पलट रही हैं बीती घड़ियाँ,

हाय, चाँदनी में जाने क्या
आज चाहता है मेरा जी !

मुझे नहीं कुछ सुधबुध अपनी !!

७—२

एक शलभ जल बुझा निमिष में

काँप रहा है थर थर दीपक !

एक शलभ जल बुझा निमिष में
दीपक के चंचल नर्त्तन पर ;
इस पागल ने कभी न देखा
अपना आकुल हृदय चीर कर !

नाच रहा था वहाँ, हाय, इस
दीपक मे भी सुन्दर दीपक !

काँप रहा है थर थर दीपक !!

८–२

●

दूर समझता है क्यों उनको

यह क्या, पागल, तुझे हुआ है ?

उन से हाय, बिछुड़ जाने पर
दूर समझता है क्यों उन को ?
किसे बुलाया करती हैं यह
निरभागी आँखें नित रो रो

आखिर इस दिल की पीड़ा में
वही नहीं यदि तो फिर क्या है !

यह क्या, पागल, तुझे हुआ है !!

८–२

अपनी याद नहीं अब आती !

अपनी याद नहीं अब आती !

उनकी आँसू-पली याद ने
मुझको मुझ से ही छिपा लिया !
नवल—वसन्त—बसी पीड़ा ने
यह मेरापन ही मिटा दिया !

मिलती है अब तो अपनी भी
मुझ को खबर उन्हीं से, साथी

अपनी याद नहीं अब आती !

१–२ (वसन्त)

●

तेरी मंज़िल बहुत दूर है

अपने से खुद ही छल मत कर !

क्या यह काफी नहीं, अकेला
विफल प्यार का भार हृदय में !
पागल ! फिर क्यों व्यर्थ भर लिया
आशा का संसार हृदय में ,

तेरी मञ्ज़िल बहुत दूर है
भार हृदय का बोझिल मत कर !

अपने से खुद ही छल मत कर !!

९–१

●

आज जल उठी यह दीपावलि

करवट ली निढाल सन्ध्या ने !

मेरे प्यार भरे प्राणों के—
आज घाव खुल गये अचानक,
वन-गुलाब के खिले कुञ्ज में
जलते हों जैसे कुछ दीपक !

आज जल उठी यह दीपावलि
शायद बुझने की आशा में !

करवट ली उदास सन्ध्या ने !!

१०-२

●

कूक रही है वन में केकी !

कूक रही है वन में केकी !

आज पुराने घाव फूट कर
लहू रो रहे हैं प्राणों में ;
लाल, गुलाबी से फूलों की
फुलवाड़ी खिल गयी हृदय में !

कोई आकर, हाय, देख ले
यह वसन्त मेरे प्राणों की !

कूक रही है वन में केकी !!

०–१

◆

आज न क्या सूरज निकलेगा ?

आज न क्या सूरज निकलेगा ?

क्या न कभी यह रात कटेगी ,
भोर न होगी आज कभी क्या ?
यह उतावला हृदय आज तो
मुँह मोड़ बैठा जीने में ;
अरे मूढ़ ! यह भी छल ही है ,
विफल प्रात की निविड़ व्यथा में

हाय, कर लिया क्या जीकर ही–
मर कर फिर अब क्या कर लेगा !

आज न क्या सूरज निकलेगा !!

११–२

◆

जग में मिला यही मुझ को तो !

जग में मिला यही मुझ को तो !

लहू-पले अरमानों का नित
मातम करना, आहें भरना;
विफल प्रतीक्षा की पीड़ा में
व्यर्थ तड़पना, गाना, मरना !

पर क्या इसके सिवा और भी
दुनिया में कुछ मिला किसीको !

जग में मिला यही मुझ को तो !!

१३-२

◆

यह भी है अधिकार उसी का

हाय, प्रीत की रीत न समझा

यदि वह भूल चुके हैं तुझ को
इसकी तुझे शिकायत क्यों हो,
जिसका है अधिकार हृदय पर :
–(सदा सदा वह दीर्घ आयु हो)–

जब चाहे वह प्यार छोड़ दे-
यह भी है अधिकार उसीका !

हाय, प्रीत की रीत न समझा !!

१४–२

●

फड़क रहा है बुझता दीपक !

फड़क रहा है बुझता दीपक !

जिस लेखक ने मुझे रचा है,
क्या यह भी था ज्ञात न उसको;
किस्सों तक में होता है—"हम—
तुम्हें चाहते हैं तुम हमको!"

फिर क्यों मुझे अधूरा रचकर
अपनी हँसी करायी नाहक !

फड़क रहा है बुझता दीपक !!

१८—२

◆

नव-वसन्त की रात, उनींदी

रजनी का दिल डोल रहा है !

एक अकेला नाम - न - जाना–

पंछी रुक-रुक बोल रहा है !

नव-वसन्त की रात, उनींदी
इच्छाओं को रुला रही है;
कहीं दूर चकवी-चकवे को
करुण कण्ठ मे बुला रही है;

और हाय प्राणों का पंछी–
उड़ने को पर तोल रहा है !

रजनी का दिल डोल रहा है !!

१८–२

मेरे सोये भाग जगा दो

मेरे सोये भाग जगा दो !

मेरी आँखों में रोती है
नव-वसन्त की रात सिमट कर ;
पूछ रही है ओ निरभागे,
कब बीतेगी तेरी पतझर ?

मुझे भूलने वाले तू ही—
बतला क्या कह दूँ मैं इस को !

मेरे सोये भाग जगा दो !!

२५–२

नींद नहीं आती जाने क्यों !

नींद नहीं आती जाने क्यों ?

एक सजग, अव्यक्त व्यथा-सी
नाच रही है विजन हृदय में ;
अबाबील की द्रुत उड़ान-सी–
लहराती हैं मन में तानें ;

लगता है, मैं हाय, कहीं कुछ
रख कर जैसे भूल गया हूँ !

नींद नहीं आती जाने क्यों !!

१६–२

कैसे जागी व्यथा सुला दूँ?

कैसे जागी व्यथा सुला दूँ।

पिछली रात, उनींदा अम्बर,
तारे आँखें झपक रहे हैं;
जैसे मेरी दुखी कहानी
सुनते सुनते ऊँघ गये हैं;

और सींखचों के पीछे मैं
जाने क्यों रोये जाता हूँ!

कैसे जागी व्यथा सुलादूँ!!

१६–२

हाय, सुबह की सपनिल घड़ियाँ !

हाय सुबह की सपनिल घड़ियाँ

जाग रही है याद किसी की ;

उमड़ रही आँखों में झड़ियाँ !

फागुन की मृदु, मंद पवन-

सरसों के खिले खेत छू आयी;

तभी फिर रही है मतवाली

झुक झुक, अलसायी, अलसायी;-

जैसे "उन" के चरण-छन्द-

रचते हों प्रीति-गीति की लड़ियाँ !

हाय, सुबह की सपनिल घड़ियां !!

१७-२

●

मैं भी जीवित था इस जग में !

मैं भी जीवित था इस जग में !

हाय, किसी के मुक्त-कुन्तलों
का मेरी छाती पर उड़ना ;
उद्‌गारों-से भरे कुचों का
अधर स्पर्श से सिहर उभरना ;

उन अधरों पर मेरे अधरों
के जुड़ने की वह रेखाएँ ! …

मेरे दिल से लगे किसी के
पुलक भरे दिल की वह धड़कन,
डरी कपोती-से उराज की
मेरे हाथों में वह फड़कन ,

मेरे पागल आलिंगन में
हाय, किसी की उखड़ी साँसें ! …

मैं भी जीवित था इस जग में !!

१८-२

●

बादल के टुकड़ों से सूरज
आँख मिचौनी खेल रहा था

भर भर रंग उँडेल रहा था !

बादल के टुकड़ों से सूरज
आँख मिचौनी खेल रहा था !!

मेरे मन में घूम उठी वह
सरस, स्निग्ध मतवाली आँखें,
भर देते थे मेरे चुम्बन
धूप छाँह की माया जिन में ;

सह कर उग्र सुहाग–निपीड़न
हँस उठते थे जो मस्ताने ;
जहाँ विदा के समय, हाय,
तूफ़ान प्रलय मे खेल रहा था !

... दिल का लहू उँडेल रहा था !

बादल के टुकड़ों से सूरज
आँख मिचौनी खेल रहा था !!

१०-२

आज विश्व में भरा हुआ है
मेरे सूनेपन का क्रन्दन

रो रो घूम रहा है बन बन

अरस-थकी रजनी के अन्तिम
सजल प्रहर का मन्द समीरण !
मेरी पीड़ा-पली आह-सी
नीम-मञ्जरी सिसक रही है;
मेरी आँसू-भरी चाह-सी
गीली मिट्टी महक रही है;

आज विश्व में भरा हुआ है
मेरे सूनेपन का क्रन्दन !

रो रो घूम रहा है बन बन !!

२१-२

जाने क्यों रोता रहता हूँ !

जाने क्यों रोता रहता हूँ !

मदा चाँद–सा मुखड़ा जब वह
मेरी आँखों में रहता है ;
उन्हें देखने को, फिर, जाने
क्यों नित तरसा करता हूँ मैं !

उनकी प्रेम–व्यथा पाकर भी
हाय, लुटा–सा क्यों रहता हूँ !

जाने क्यों रोता रहता हूँ !!

२२–२

प्राणों में कुछ–फड़क रहा है

प्राणों में कुछ–फड़क रहा है।

बार बार सुनता हूँ कुछ मैं
उनके क़दमों की आहट–सी ;
चौंक चौंक उठ देख रही है
निद्राहीन प्रतीक्षा मेरी—;

हाय, कहाँ वह !–यह तो मेरा
नामुराद दिल धड़क रहा है !

प्राणों में कुछ–फड़क रहा है !!

२२-२

हाय, गया रजनी का वैभव !

हाय, गया रजनी का वैभव !

मेरी पीड़ा इसका धन था ,

मेरी आहें इसका सौरभ !

आज न जाने क्यों दिलसे वह

उठता नहीं प्रगाढ़ धुआँ–सा ;

धीरज हीन पतंगे–सा यह

जलकर शायद राख हो चुका ।

पहले जल जल कर ही अपने

मैं दिन काट लिया करता था ,

हाय, क्या करूँ , क़िसमत मेरी ,

यह भी जाता रहा सहारा !

कैसे काटूंगा जीवन की

बरफ़ीली, निस्सीम रात अब !

हाय, गया रजनी का वैभव !!

२४–२

●

उजड़ गयी रजनी की शोभा

उजड़ गयी रजनी की शोभा !

मेरी दर्द-भरी आहों
इस की साँसों में सौरभ था;
मेरी पीड़ा इसकी निधि थी;
मेरा दुख इस का वैभव था;

मेरी सजल उनींदी तड़पन
इसके प्राणों की थी प्रतिभा !

मेरी व्यर्थ प्रतीक्षा से था
इस के अन्धकार में जीवन ;
मेरे आतुर रोदन से था
इसका तारावलि में स्पन्दन ;

जब से मेरा हृदय मरा है
हाय, लुट गयी निशि की आभा !

उजड़ गयी रजनी की शोभा !!

◆

२५-२

आज मृत्यु मुस्काती-सी है !

आज मृत्यु मुस्काती-सी है !

अपने नम्र इशारों से

प्राची के पार बुलाती-सी है !

घुल घुल मरते देख मुझे, प्रिय,

घुला रही हो क्यों अपना जी ;

काश, समझ सकतीं कि प्रेम का

एक रूप है यों मरना भी !

जो ज्वाला है ज्योति दीप की

इस को वही जलाती भी है !

आज मृत्यु मुस्काती-सी है !!

३–३

एक अँधेरी दीर्घ रात निस्सीम
क्षितिज तक फैल गयी है

हाय, साँस उखड़े उखड़े हैं!

बीते तूफानों की मानो
थकी याद के कुछ टुकड़े हैं।

जब से अलग हुआ हूँ तुम से
यह दुनिया ही बदल गयी है
एक अँधेरी दीर्घ रात—
निस्सीम क्षितिज तक फैल गयी है!

सुबह, दोपहर, साँझ, सभी अब
उसी रात के बस टुकड़े—हैं!

हाय, साँस उखड़े–उखड़े हैं!!

८–३

छिटक रही है मस्त चाँदनी !

छिटक रही है मस्त चाँदनी !

थिरक रही है विश्व-हृदय में

चैत-रात की नृत्य-रागनी !

पीपल पर से झुके झाँकते
हाय, चाँद का रूप मनोहर !
आज रात का होश नहीं है :
पड़ने लगी फुहार मचल कर !
हाय, कहीं तुम भी आ जातीं
होता उदय चाँद मेरा भी !
मेरी अन्धेरी रातों में !

भर जाती तब रजत चाँदनी !
चैत रात की नृत्य- रागनी !

छिटक रही है मस्त चाँदनी !!

६-३

◆

आज हृदय भारी भारी है !

आज हृदय भारी भारी है !

तुझ से प्यार न करने का, क्या—
मूर्ख ! उन्हें अधिकार नहीं है
उनकी इच्छा के विरुद्ध, क्या
इच्छा रखनी पाप नहीं है ?

रोया करता है फिर क्यों नित
विरह व्यथा में तड़प तड़प कर ?
धड़का करता है क्यों दिल में
मिलने का अरमान निरन्तर ?

उनकी, किसी खुशी से बढ़ कर
अपनी ख़ुशी तुझे प्यारी है !

आज हृदय भारी भारी है

७—३

◆

क्यों उदास रहता है, पागल ?

क्यों उदास रहता है, पागल !

मिलन विरह का सुख दुख क्या है :
अपने उद्गारों की माया !
कब तक हँसे रोयगा यों ही
देख देख कर अपनी छाया !

यह सब मिथ्या है निर्भागे
उनकी ख़ुशी सत्य है केवल !

क्यों उदास रहता है, पागल !!

७–३

◆

घटते नहीं, हाय क्यों यह दिन ;

घटते नहीं, हाय, क्यों यह दिन !

बरसा करती है फुहार सी

क्यों आँखों से रिमझिम निसदिन !

यदि वह बदल चुके हैं तो फिर
इस की तुम्हे शिकायत क्यों है ;
'कभी' तुझे भी प्यार किया था,
क्या उपहार यही कुछ कम है ?

ओ कृतघ्न, इहसान मानने—
के बदले यह शिकवे कैसे ;
जो कुछ पाया है उस पर ही—
क्यों सन्तोष नहीं, निर्भागे ?

चुका न पावेगा युग युग भी
जो पाया है उसका ही ऋण !

कटते नहीं, हाय, क्यों वह दिन !!!

८-३

●

दिल में मचल रही बरसातें !

दिल में मचल रही बरसातें !

सुबह आँख खुलते ही मन में
सदा उभरता नाम किसी का ;
जैसे गहन कुएँ की तह से
ऊपर का प्रतिबिम्ब उभरता !

धड़का करती है प्राणों में
सदा किसी की याद अचञ्चल;–
जैसे मरुभूमी में कोई—
उबल रहा हो सोता कलकल !

रोती हैं नित आँखें, जैसे—
जंगल में सावन की रातें !

दिल में मचल रही बरसातें !!

८–३

खोज रहा हूँ कोई दर्दी !

खोज रहा हूँ कोई दर्दी !
मेरे मन में आज किसी ने
संगीहीन निशा सी भरदी !!

वह आये थे या देखा था
कोई भोर समय का सपना !
उस सपने की सुखद कल्पना
नयनों से हर लेती निद्रा
हाय, स्वप्न की रंगीनी ने
मेरी भोर अँधेरी कर दी !
खोज रहा हूँ कोई दर्दी !

११-३

आँखों से आँसू झरते हैं !

आँखों से आँसू झरते हैं !

मैं हूँ फेन-भरी हलचल-सी ;
मैं तूफान महासागर का ;
किन्तु, हाय, ओ दूर दूर से
हँसते, मेरे मन के चन्दा,

यह भी सोचा कभी कि आखिर
क्यों तूफान उठा करते हैं !

आँखों से आँसू झरते हैं !

१४--३

झरे कुसुम चुनता रहता हूँ !

झरे कुसुम चुनता रहता हूँ !
अपना यौवन,. अपने दुख-सा
मैं चुपचाप पड़ा सहता हूँ !!

सुबह आँख खुलते ही दिल में
जग जाती है याद तुम्हारी ;
प्राणों में कुछ रोने लगती
दिया-बुझी सुनसान रात-सी;
आँखों में निर्धन की गीली
खिन्न चिता-सी जलने लगती;
और साँझ तक खोया खोया-
मैं उदास फिरता रहता हूँ !
झरे कुसुम चुनता रहता

१५-३

जब से तुम बदली हो प्रेयसि
यह दुनिया ही बदल गयी है

प्राणों में कुछ घुटता-सा है !

रह रह कर मरघट के तट का
एक बगूला उठता-सा है !

जब से तुम बदली हो प्रेयसि ,
यह दुनिया ही बदल गयी है ;
अब वह साँझ नहीं; न सवेरा,
और रात भी रात नहीं है !

मेरा यह जीवन··अब केवल
नाम मृत्यु की गफ़लत-सा है !

प्राणों में कुछ घुटता-सा है !!

१६-३

क्यों तूफ़ान उठाता है नित
मेरे मन में रूप तुम्हारा

ओ मेरे जीवन के चंदा !

मेरे अभिलाषा सागर से
यदि रहना था तुम्हें दूर ही,
तो फिर मेरी आशा भी क्यों
निपट निराशा में न बदल दी !
क्यों तूफ़ान उठाता है नित
मेरे मन में रूप तुम्हारा ;

हाय, बने बैठे हो क्यों तुम
इस जीवन का अटल सहारा ;

ओ मेरे जीवन के चंदा !!

१८-६

◆

आज बढ़ गयी हाय और भी
यह तो प्राणों की आकुलता

फूट बही मन की नीरवता !

याद आ रहा है वह उनका

मुड़ मुड़ जाते समय देखना !

मैं समझा था उन से मिल कर
मेरा हृदय ठहर जायेगा :
प्यासे प्राणों का चिर क्रन्दन
पल भर को तो रुक पायेगा ;

किन्तु बढ़ गयी, हाय, और भी
यह तो प्राणों की आकुलता !

फूट बही मन की नीरवता !!

१९-३

◆

अपना कहूँ जगत में किसको ?

मेरे तो सर्वस्व तुम्हीं हो !

और कौन है तुम्हीं बता दो

अपना कहूँ जगत में जिसको

मैंने माना, मैं निरभागा

प्रिये ! तुम्हारे योग्य नहीं हूँ !

तुम वसन्त के नव–प्रभात हो,

मैं पतझर की चिर रजनी हूँ;

किन्तु, प्रतीक्षा देखो मेरी,

मेरा चाह भरा दिल देखो !

मेरे तो सर्वस्व तुम्हीं हो !!

२०–३

जग में यों भी हुआ न होगा

याद आ रहे हैं फिर वह ही !
जग में यों भी हुआ न होगा
कभी पराये बस में कोई !!

जिन्हें भूलना चाहा था, उन
को ही याद किये जाता हूँ;
हाय, पागलों-सा सारा दिन
उनका नाम लिये जाता हूँ;

उन्हें भूलने के प्रयास में
भूल गया हूँ मैं निज को ही !

याद आ रहे हैं फिर वह ही !!

२३-३

कहीं दूर गाता है कोई

आँखों से पानी झरता है !

कहीं दूर गाता है कोई
दर्द भरे धीमे लहजे में;
ठहर, ठहर, ओ गाने वाले;
दम तो ले ! कुछ सुनने तो दे !

देख ! गा रहा है कुछ रुक रुक
मेरा दिल भी धीरे धीरे !
नहीं ;–किसी के क़दमों की
यह जाग रही है आहट इस में !

वही मस्त मृदु आहट जिस की
प्रतिध्वनी मेरी कविता है !
आँखों से पानी झरता है !!

२०–३

हारी बाजी कब जीतेंगे ?

हारी बाज़ी कब जीतेंगे ?

यह भी दिन हैं रात रात भर
नींद नहीं आती पल भर भी;
वह भी दिन थे जब जाग्रति भी
एक सुनहला सपना-सा थी;

वह तो आँख झपकते बीते
किन्तु, हाय, यह कब बीतेंगे !

हारी बाज़ी कब जीतेंगे !

३—४

मेरी बनकर अब मुझको भी
बना दिया है तुमने मेरा

तुम ने मुझे बनाया जगमय !

अखिल विश्व में केवल तुम ही
मेरी हो, ओ मेरी आशा !
मेरी बन कर अब मुझको भी
बना दिया है तुम ने मेरा;—
इतना अति "मेरा" कि तुम्हें भी
भूल भूल जाता हूँ अब मैं !

तुम ने मुझे बनाया जगमय !

१८-४

◆

मैं भी अब जी लूँगा, प्रियवर !

मैं भी अब जी लूँगा, प्रियवर !

तुम मेरी हो, और बन गया,
हूँ, अब मैं भी, प्रियवर, अपना;
मुझे तुम्हारे लिये बचा कर
अपनापन रखना ही होगा;

जीवन की घाटी में अब मैं
इसे न गिरने दूंगा, प्रियवर !

मैं भी अब जी लूंगा, प्रियवर

१९-४

●

मैं हूँ अपनी आप विफलता !

मैं हूँ अपनी आप विफलता !

मुझे पता है इन तारों को
संभव नहीं कभी गिन पाना;
यह निश्चय ही पागलपन है
व्यर्थ कार्य में समय बिताना;

किन्तु नींद ही जब न आय तो
और करे भी कोई फिर क्या ?

मैं हूँ अपनी आप विफलता !!

१९–५

मूज रही हैं क्यों यह पलकें ?

मुझ से कोई पूछ रहा था !

"मूज रही हैं क्यों यह पलकें ?
आँखों में इतनी लाली क्यों ?"
कैसे कहता—"रातों को मैं
छिप छिप कर रोया करता हूँ !"

आँखें मल, कह दिया कि–"योंहीं,
रात ठीक कुछ सो न सका था ।"

मुझसे कोई पूछ रहा था !

'१९-८'

मेरा साथी बिछुड़ गया है !

मेरा साथी बिछुड़ गया है !

जिसे दिया था प्यार हृदय का
आज वही मुँह मोड़ गया है !
कुछ कहने को नहीं शेष, बस
यही कि साथी बिछुड़ गया है !

मेरा साथी बिछुड़ गया है !!

२०-५

•

फूट गयी, हा, मेरी क़िस्मत !

फूट गयी, हा, मेरी किसमत !

गूँथा किया हार जीवन भर
चुन चुन कर सपनों की कलियाँ;
कभी न सोचा था नफरत से
कोई ठुकरा इसे जायगा
हाय, किया क्या मैंने तो यह—
लुटवा दी जीवन की मेहनत;

मैं ही दोषी सही–किंतु यह
जीवन तो अब गया अकारत !

फूट गयी, हा, मेरी किसमत !

२९–९

……लम्बा निष्ठुर विधुर संदेसा

…लम्बा निष्ठुर विधुर सँदेसा !

यह कहने को, प्रिय, भेजा है तुमने मुझको निठुर सँदेसा:—
हाय कि तुम अब बदल चुकी हो, बदल चुका है प्यार तुम्हारा !

प्यार रहित होकर कोई भी
अनगिनती पन्ने लिखता है !
दो शब्दों में कह देते हैं
तुम से नाता टूट चुका है !

झुठलाता है स्वयं तुम्हें यह आहें भरता पत्र तुम्हारा !

दस पन्नों का पत्र तुम्हारा !!

२५–५

हाय हृदय कुछ समझ न पाया

अपनी इच्छा के प्रलाप में, हाय, हृदय ने समझ लिया था
प्रेम सत्य है, अविनाशी है, इसको काल नहीं छू सकता !

हाय, अभागा समझ न पाया
यह है आनी जानी छाया;
आशा छाया, जीवन छाया;
प्यार, दुलार, जवानी छाया;

जो कुछ हमें मिला है वह सब सपना-सा खो जाने को है !
आँखें, हाय, भूल जाने को, पागल दिल सो जाने को है !!

२५-५

◆

जीवन तो अब भी प्यासा है

जीवन तो अब भी प्यासा है

प्रेम-सुरा की दो घूँटों ने-
तुम्हें तृप्त यदि कर डाला है,
मत ठुकराओ मुझे कि मेरा
जीवन तो अब भी प्यासा है !

यदि अब सम्भव नहीं कि मुझको
'प्रियतम' समझ सको, हे प्रियवर,
पर इतना तो करो कि अपना
'मित्र' समझती रहो निरन्तर !!

२६-५

◆

छिटक रही है शरत् चाँदनी !

छिटक रही है शरत् चाँदनी !

हाय कहीं तुम भी आ जाते
होता उदय चाँद मेरा भी;
मेरे भी सूने प्राणों में
प्रिय, वह उठती मधुर रागिनी;

मेरी रातों में भर जाती
चिर-प्रमादिनी रजत चाँदनी !

छिटक रही है शरत् चाँदनी !!

शरद पूर्णिमा—४३
रात्रि दो बजे

◆

आज प्रभात नहीं क्यों होती !

आज प्रभात नहीं क्यों होती !

मेरे निर्भागे जीवन की
विजन रात के अन्धकार में
हाय, चाँदनी से बोझिल हो
आँसू-से जाने क्यों इतने
टूट रहे हैं उज्ज्वल तारे;
काँप रही क्यों रात न जाने ?

शायद निष्ठुर याद किसी की
गूँथ रही है पिघले मोती !

आज प्रभात नहीं क्यों होती !!

१३-१०-४३

मचल रहा है प्यासा प्यार !

मचल रहा है प्यासा प्यार !

विगत दिनों की सुखद कहानी
ले अंचल में रात सुहानी,
रजनीगंधा के सौरभ-सी
भर आयी मन में दीवानी,

और किसी के जन्मदिवस का
छलका आँखों से उपहार !

मचल रहा है प्यासा प्यार !!

१९४४-
प्रातःकाल १ बजे

आज स्वप्न भी मुस्काते हैं

आज स्वप्न भी मुसकाते हैं !

मेरी अन्धकारमय जगती
विहँस उठी उनके आते ही;
बहते बहते सकुच थम गये
पल भर को मेरे आँसू भी;
चाँद निकलते ही तो सहसा
तारे निष्प्रभ हो जाते हैं !

आज स्वप्न भी मुस्काते हैं !!

३०-४-४८

◆

प्रिय, तुमने भी विश्व रचा था !

प्रिय, तुमने भी विश्व रचा था !

तुम तो शायद भूल चुकी हो
पर मैं भूल न पाया उसको;
कैसे भूलूँ, मेरे ही तो
प्राणों में वह रचा गया था !

प्रिय तुमने भी विश्व रचा था !

रंगी बदलियों की छाया में
यौवन-मुखरित जीवन पथ पर
एक मोड़ में, कभी दिन ढले,
तुमसे भेंट हुई थी, प्रियवर;
तुम ने मेरी नम्र विनय पर
विहँस कहा था कुछ सकुचाकर,
यह दिल (इसका सर्वनाश हो)
ऐसा ज़ोर ज़ोर से धड़का

हाय, कि मैं कुछ सुन न सका था !

फिर तुम मेरे हृदय कुञ्ज में
आयीं खिली जुही के नीचे;
नृत्य-भंगिमा-सी में बाहू
धीरे धीरे ऊपर खींचे--
और तोड़ कुछ कोमल कलियाँ;
विहँस सजायीं अलकावलियाँ
मेरे अश्रुसलिल में जिनका,
रजनीगंधा की खुशबू-सा,

कोमल साया झलक गया था !

भरी बरसती बरसातों की
कुहकमयी नीरव रातों में-
गाये जाते हैं जो गायन
थाम थाम कर दिल हाथों में-
उनकी मृदु लय-सी लहराती
मस्त चाल से नर्तन रचती
आँक गयीं थीं चरण चिह्न तुम
मेरी सीमाहीन व्यथा पर;

मेरा सोता भाग्य हँसा था !

हाय, आज वह बीते दो दिन
मेरे हृदय-तीर पर आकर
भटक रहे हैं "हमें" खोजते,
बरसाते आँखों से निर्झर !
"कहाँ गयी वह ?" एक पूछता !
"कहाँ गया वह?" उत्तर मिलता !
अचरज से फिर एक दूसरे
का मुँह देख तड़प कर कहते:

"यह घर भी क्या कभी बसा था !"

लहराती है अलक झलक वह
मेरे अश्रु सलिल में प्रियवर;
और अभी तक बने हुए हैं
चरण चिह्न इस दीर्घ व्यथा पर
तुम तो शायद भूल चुकी हो,
पर मैं भूल न पाया इनको;
कैसे भूलूँ, मेरे तो अब
जीवन का अवलम्ब यही हैं !

तुम ने यह प्रिय प्रेम दिया था !
प्रिय, तुम ने भी विश्व रचा था !!

२७-१-४४

◆

बरस थकी—सन्ध्या का प्रांगण
धुले कुसुम-सा महक रहा है !

बरस थकी सन्ध्या का प्रांगण धुले कुसुम-सा महक रहा है !
प्रिये, तुम्हारी स्मृति-छाया में हृदय विहग-सा चहक रहा है !!

पहुँच नहीं पातीं यदि तुम तक
मेरे गीतों की झंकारें ;
यदि अनमिली, खुली, नीरव हैं
पड़ी हृदय-तन्त्री की तारें;—

मत समझो यह, प्रिये, कि मेरा दिल गाना ही भूल गया है !

आज अगर मेरी वीणा से
राग अनवरत नहीं निकलता ;
यदि नीरवता की गोदी में
मेरा कलरव क्रन्दन करता ;—

मत समझो, प्रिय, हथकड़ियों का लोहा उर में समा गया है !

प्रखर दुपहरी की छाती पर
झरें, झुलसते पाटल का मन
कभी भूलता है क्या, उर में
छिपे भोर के विमल तुहिन कण ?

फिर क्यों समझो, प्रिये, तुम्हारा पागल गाना भूल गया है !
प्रिये तुम्हारी स्मृति-छाया में हृदय विहग-सा चहक रहा है !!

२६-६-४४

◆

अब तो तुम्हें और भी प्रेयसि
मेरी याद सताती होगी !

अब तो तुम्हें और भी प्रेयसि, मेरी याद सताती होगी !

बाहर सरस डाल पर कोकिल
कूक रही होगी मतवारी;
घर में मार रहा होगा शिशु
आकुल हर्ष - भरी किलकारी;
किन्तु तुम्हारी आँखें शुभ्रे, श्रावण घन बरसाती होंगी !
मेरी याद सताती होगी !

कोमल, तन्द्रिल, तमोजाल-सम
लटें खेंच शिशु हँसता होगा;
विस्मृति-सागर नील नीर पर
ऊषा-सम कुछ ढलता होगा;
पर तुरन्त पीड़ा-विधौत दुख-मलिन सान्ध्य छा जाती होगी !
मेरी याद सताती होगी !

क्षीणोन्नत, दृग - सुखद, वक्ष से
जब बालक अञ्चल खिसका कर,
नन्हें अधरों से टटोलता
पाण्डु—चन्द्रिका—वर्ण पयोधर
तीव्र-स्पर्श निःसीम हर्ष में पीड़ा लहरा आती होगी !
मेरी याद सताती होगी !

स्वर्ण—मञ्जरित आम्र डाल से
दग्ध-ताम्र-आँगन में कोयल
पल्लव – पुञ्ज – सघन – छाया के
आन बिछाती जब स्वप्नाञ्चल,
पुलक भरी, कम्पित, कातर-सी अभिलाषा जग जाती होगी !
अब तो तुम्हें और भी प्रेयसि मेरी याद सताती होगी !!

१५-६-४१
(देवली कैम्प जेल)

◆

विदा

प्राणेश्वरि, यह कैसी दुविधा ?

विरह-द्वार निज कर कमलों से
खोलो, खोलो, प्रेयसि, खोलो !
दीप झुकाओ, नयन उठाओ,
मधु-अधरों से कुछ तो बोलो !
देखो, रो रो आज बुलाती
निज हित कारण दुखिया वसुधा !
प्राणेश्वरि, फिर कैसी दुविधा !!

अधरों पर मृदु स्मित आने दो !

परम प्रशान्त विषाद भरे दृग
नवघन-वर्णा नीलाम्बरि से
पोंछो, पोंछो, जीवन - देवी,
करो विदा अब हँसते हँसते
नीरवता प्लावित निशान्त में
स्वप्न समान मुझे जाने दो !
अधरों पर मृदु स्मित आने दो !!

प्रिये ! तजो संशय छोड़ो भय !

अकथ-व्यथा-आघात - विकम्पित
व्यथा-शिथिल तव अधर, निरन्तर
मलयज चञ्चल-पङ्कज-दल सम
ढके रहेंगे मम मानस-सर ।
अमित विपुल विश्वास, सखी री,
कर देगा मुझ को मृत्युञ्जय !
प्रिये, तजो संशय, छोड़ो भय !!

करो विदा हँस हँस कर, रानी !

अन्तर निर्गत वाष्प-ढके, तव
प्रीति-वायु चल शतदल-लोचन,
हिम-प्रक्षालित हृदय-गगन में
ध्रुव-सम चमकेंगे अब प्रतिक्षण !
घिर घिर गूँजेगी प्राणों में
तेरी संशय कुण्ठित वाणी !
करो विदा हँस हँस कर रानी !!

करने दो अन्तिम उपासना !

रखने दो यह मस्तक अपने
अमल कमल कोमल चरणों पर
अन्तरतम की स्निग्ध साध, सखि,
बहने दो आँखों से पल भर ।
निर्मल परिमल चरण धूलि पर
आज लुटा लूँ सरस वासना !
मेरी यह अन्तिम उपासना !!

पलट पलट मत देखो, सजनी !

मेरे उर की निर्बलता को
आज बनाओ मत अपना बल !

तव अनिमेष तृषातुर लोचन
देख हुआ जाता उर छल छल।
तेरी ऊषा—अलस दृष्टि से
मन में भरती जाती रजनी !
पलट पलट मत देखो, सजनी !!

कूक कूक पिकि 'पीऊ-पीऊ' !

मेरे स्मरण-विधुर मानस का
तरुण, अशान्त, असीम प्रणय, री,
जग के प्राणविहीन हृदय में
भर देगा निःशंक अभय, री !
दृग जल-प्लुत निज स्मित-अंचल से
पोंछूँगा जगती के आँसू !
कूक कूक पिकि 'पीऊ—पीऊ' !!

६-११-३६
(सेन्ट्रल जेल लाहौर, अनशन)

◆

आम्र मंजरी सिहर सिहर कर
देती आतुर प्रेम सँदेसा

कलियों में मुस्का मुस्का कर
अलबेली सुकुमार मालती,
निज सौरभ के प्रेम-सँदेसे
भेज भ्रमर से प्रीति पालती !

गेहविहीना कोकिल का रव
देख विजन कानन में रोता,
आम्रमञ्जरी सिहर सिहर कर
देती आतुर प्रेम सँदेसा !

रजनी अञ्चल में मुख ढक कर
स्वप्न विधुर प्रणयातुर अम्बर,
अश्रुकणों में बिखरा जाता
प्रेम-सँदेसे अवनि-वक्ष पर,

खद्योतों के छिन्न हार में
प्रेम-सँदेसे गूँथ गूँथ कर,
चक्रवाक का क्रन्दन ले निशि—
ऊषा का अञ्चल देती भर !

प्रेम-रँगे सुख सन्देशों से
जग का विस्तृत अञ्चल चित्रित;
अखिल विश्व में केवल मैं ही
हाय, अभागा इससे वञ्चित !

अब इस सुख-सम्पन्न जगत में
मेरा धन, नयनों का पानी;
विरही जीवन, मिलन घड़ी की
केवल भूली हुई निशानी !!

९-९-३७

अब क्यों रोते प्राण निरन्तर !

अब क्यों रोते प्राण निरन्तर !

साथ चले न गये क्यों उस दिन

लज्जाहीन निकल कर !

फेन-शुभ्र-प्राचीरों पर तब

ठगे ठगे-से ये अटके थे

जहाँ किसी की सुन्दर छाया

अंकित थी पल भर तक पहले,

तरुण अनन्त वसन्त-बसी थी

छाया-चित्र सजी वह घड़ियाँ;

उमड़ रही हैं विजन हृदय में

श्रावण-तिमिर-रँगी अब झड़ियाँ !

१८-२-३८

◆

दिल की धड़कन याद न आ

याद न आ, अब याद न आ !

उन आँसू-पिये हुए नयनों की, घोर कालिमा, याद न आ !!

बेदर्द फ़सीलों के पत्थर
फिर ढाल रहा हूँ जीवन में
फिर गला रहा हूँ छाती में
फाटक की फ़ौलादी सीखें ।

बिखरे, घुँघराले बालों के सुकुमार परस, ओ, याद न आ !

बेलोच बेड़ियों की झन झन में
आज हृदय दफ़नाता हूँ,
ज़ञ्जीरों की मुरदा ठण्डक में
प्राणों को कफ़नाता हूँ !

ओ विदा समय आलिंगन में उस दिल की धड़कन, याद न आ !

झुकी दीवारों की छाया
फिर आँखों में भर लेता हूँ,
चिर मौन सलाखों का बोझा
अरमानों पर धर लेता हूँ,

वह डरे पखेरू सम कम्पित हाथों की सिहरन, याद न आ !

याद न आ ! तू याद न आ !!

१८-६-४०
(दिल्ली जेल)

◆

विदा समय की सघन उदासी

दिल की दुनिया हिल हिल जाती !

विदा समय की सघन उदासी
सूने मन में भर भर आती !

मुझे पकड़ कर, रो रो, रुक रुक,
डूबे स्वर में कहना उस दिन;
"लौट सको तो लौट चलो प्रिय,
मैं तो रोक सकी न अभागिन;

हाय, अहित - चिन्तक से तुमको
प्रियतम, दूर छिपा रख पाती,
चीर कहीं सकती यदि छाती !!"

रक्त-रँगी, हियहीन हथकड़ी;
कठिन बेड़ियों की झंकारें;
युग युग के क्रन्दन से बोझल
जग ओझल मैली दीवारें;

मेरा मन न हिला पायी थीं
लेकिन आज नहीं कल आती !
नयन बने जाते बरसाती !!

शोक, वियोग भरे इस जग की
फिर से रचना करनी होगी ;
सुख, सुहाग की शोणित लाशें
बुनियादों में भरनी होंगी !

फिर उस जग में हम तुम होंगे,
अभिलाषा होगी मधुमाती;
यौवन-सुरा देह छलकाती !!

८. ६. ४०

◆

मुझको दुखी किये जाती है !

मुझको दुखी किये जाती है।

सब आशाएँ सूख चुकी हैं,
उजड़ चुका संसार प्रणय का,
चिता जल चुकी, राख उड़ चुकी,
मातम तक हो चुका हृदय का,

फिर भी एक उमंग न जाने,
क्यों कम्बख्त जिये जाती है !

मुझ को दुखी किये जाती है !।

२१-६

◆